अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद

हिंदी साहित्य और जनसंचार माध्यम

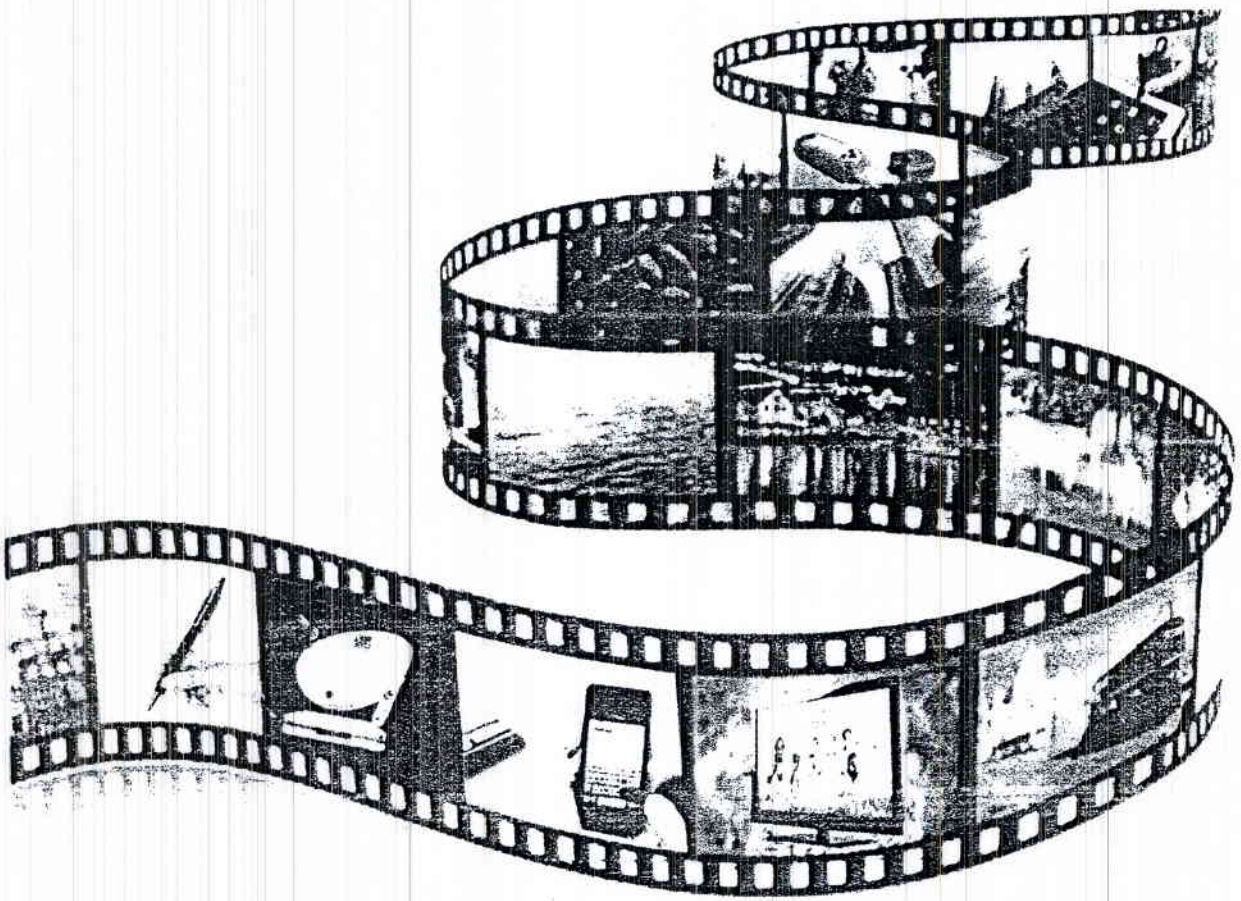

चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय
शिरूर, जि. पुणे महाराष्ट्र, भारत

उत्तर–आधुनिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में मीडिया

मानवी सभ्यता का इतिहास कदम–कदम पर अपने बदलते माध्यमों को विकसित करते हुए रचा गया है वर्तमान युग में मीडिया एक ऐसी शक्ति बनकर उभरा है कि, जिसके द्वारा आम आदमी की सोच में परिवर्तन किया गया है साहित्यकार तो जन मानस का चितेरा है, मीडिया साहित्य सृजन तथा प्रकाशन का माध्यम बना है। इसी के साथ पल भर में प्रतिक्रिया देने का माध्यम बना है। वे मीडिया प्रिट मीडिया, मास मीडिया आम आदमी की जिंदगी को बदल रहा है। वर्तमान कम्प्यूटर पीढ़ि पर वेब मीडिया का प्रभाव है ।जहॉ पर यह सुविधा नहीं है, वहॉं पर प्रिंट मीडिया पहुँचा हुआ है तथा मास मीडिया ने घर परिवार के रिश्तों की बुनियाद हिलाकर रख दी है। साहित्यकार इस प्रदर्षन को महत्व देने वाले समाज की संवेदनाओं को पकड़कर सृजन कार्य करता है। कई बार तो जनसंचार माध्यामों द्वारा साहित्य का प्रस्तुतिकरण होता है तब साहित्य के मुल तत्वों को तिलांजलि दि जाती है। उँट के मुँह में जिरा ढुँढने के बराबर वर्तमान व्यवसायिक दृष्टिकोण के मीडिया में आदर्शवाद को ढूँढना है।

वेब मीडिया के अंर्तगत हिंदी साहित्यकारों के ब्लॉग की संख्या हजारों का ऑकडा पार कर चुकी है। हिंदी साहित्य की प्रचंड सामग्री लाखो के पृष्ठो में ब्लॉग के जरिए डाली गई है। यह बहुत ही सराहनीय कदम है। वर्तमान के साहित्यकारों को कभी–कभी यह डर भी सताता है कि, साहित्यकारों की संख्या तो बढ़ रही है पर चोर्यकर्म बढ़ने की संभावना अधिक है। यह बात हिंदी साहित्यकारों के अधिकारों पर प्रश्न उपस्थित करती है। हम सभी को मीडिया से जन्में इस उत्तर आधुनिक समाज की संकल्पना को समझना जरुरी है। इसी के साथ वैश्वीकरण, बाज़ारवाद यह उत्तर आधुनिक समाज की बुनियाद है, इससे परिचित होना आवश्यक है। समकालीन साहित्यकार को आधुनिकता की बुनियादी तत्वों को भी भूलना नहीं है। हिंदी साहित्यकार नैतिक मूल्यों को भूलकर अपने अस्तित्व को समाप्त नहीं करेंगा। मीडिया को अगर साहित्य सृजन के कर्म में अपनी भूमिका दृढ़ करनी है, तो व्यवसायिक दृष्टिकोण पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है।

इक्किसवीं सदी का हिंदी साहित्य संक्रमण युग का साहित्य है। जिसका विस्तार उद्देश्य की दृष्टि से विमर्श में परिवर्तित हुआ है। नारी–विमर्श दलित–विमर्श आदिवासी–विमर्श, वृध्द–विमर्श आदि विचारधाराओं को लेकर समकालीन साहित्य सफ़र कर रहा है। मीडिया के कारण सृजनात्मक साहित्य व्यवसायिक बन गया हैइस बात को साहित्यकारों को भुलना नहीं चाहिए कि, मीडिया साहित्य का साधन है साध्य नहीं। इसी के साथ यह मौलिक लेखन सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी भी मीडिया की है। इसलिए मीडिया के विभिन्न स्त्रोंतो द्वारा जो साहित्य प्रकाशित होता है। उसको Like ,Post एवं Commentद्वारा लोकप्रियता दिलाने का कार्य वेब मीडिया करता है ।

हम जानते है कि, वेब पर ब्लॉग विचारों का कचराघर न बनकर रह जाए, अगर ऐसा हुआ तो मीडिया और साहित्य के अंर्त संबंधो में दरार पड सकती है। इसमें डर यह भी यह कि, वर्तमान समाज साहित्यकार से अधिक मीडिया पर अधिक विश्वास करता है। डॉ. राजेंद्र मिश्र जी अपने ग्रंथ 'भविष्य का साहित्य 'में कहते हैं, "मीडिया ने साहित्य के श्रोताओं दर्शको और पाठकों के एक विशाल समूह को उनकी पसंद से जोडने का काम किया है। उसमें उत्कृष्ट संस्कृति या मूल्य की कोई गुंजाईशनहीं है। "लेकिन जहॉ पर इस मीडिया का उपयोग साहित्यिक तथा सामाजिक पतन के लिए किया जा रहा है वह पर इस पतन पर अंकुश मीडिया के द्वारा ही लगाया जा सकता है।

साहित्य और मीडिया का सक्षम समंवय ही सक्षम समाज की निर्मिती कर सकता है। 21 वीं शताब्दी के आरंभ में नवीन तकनीकों के पर्दापण के कारण एक बार फिर हिंदी साहित्य के विकास का सुअवसर प्राप्त हुआ है। इस अवसर का साहित्याकारों को ध्यान रहे। इसलिए मीडिया के धुरंधरो को भी साहित्य का सम्मान करना जरुरी है तथा साहित्यकारों को मीडिया के सभी